संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

# ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ **भाषा : हिन्दी**
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०२५
वर्ष : ३४ अंक : ११ (निरंतर अंक : ३८९)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

**संत महिमा विशेष**

## राष्ट्रहित के अनेकानेक सेवाकार्यों का उद्गम-स्थल संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद

**सनातनियों की आस्था का केन्द्र**

**गौ रक्षण व संवर्धन**

**नैतिक मूल्यों की यूनिवर्सिटी**

**पर्यावरण सुरक्षा की कार्यशाला**

**शांति-प्राप्ति का अलौकिक मंदिर**

**वैदिक शास्त्रों के ज्ञान का प्रचार-केन्द्र**

## कुछ दिनों के खेल-आयोजन के लिए ५३ वर्षों से समाजहित में रत देश-विदेश के असंख्य लोगों का आस्था-केन्द्र तोड़ना कितना उचित है ?

परम श्रद्धेय पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के लिए मेरे अंतःकरण में इसलिए परम भाव है कि हिन्दुत्व की रक्षा के लिए उन्होंने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया। सत्य की विजय होगी।

- श्रीराम जन्मभूमि न्यास के कोषाध्यक्ष स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी

देश-विदेश के करोड़ों लोगों की आस्था इस स्थान से जुड़ी है। पूज्य बापूजी की यह तपःस्थली सुरक्षित रहनी चाहिए।

- पंचदशनाम जूना अखाड़े के वरिष्ठ महामंडलेश्वर स्वामी आत्मानंद गिरिजी

भौतिक समृद्धि को भुनाने के लिए संतों के ऐसे पवित्र आश्रम बलि नहीं चढ़ने चाहिए।

- श्री प्रदीपभाई शास्त्री, प्रसिद्ध कथा-प्रवक्ता

# जनता की आवाज
# 'राष्ट्र की इस अनमोल धरोहर की हो रक्षा !'

संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद पिछले पाँच दशकों से लाखों-करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था, विश्वास और आत्मिक उत्थान का केन्द्र रहा है। ओलम्पिक २०३६ की मेजबानी की तैयारी शुरू हो गयी है, आश्रम की भूमि पर स्पोर्ट्स एन्क्लेव बनाने की योजना है। २१ अप्रैल को सरकार द्वारा आश्रम को खाली करने का नोटिस दिये जाने पर देशभर के असंख्य सनातनप्रेमी, श्रद्धालुजन, सामाजिक एवं धार्मिक संगठन एक स्वर से अपनी गहन चिंता और संवेदना प्रकट कर रहे हैं। सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर यह चर्चित विषय बना हुआ है।

विभिन्न सनातनप्रेमियों और संगठनों की ओर से भारत के प्रधानमंत्री, खेलमंत्री आदि को जिलाधिकारियों के माध्यम से ज्ञापन सौंपे जा रहे हैं।

ज्ञापनों में माँग की जा रही है कि देश, समाज और प्राणिमात्र के उत्थानार्थ आश्रम से अनगिनत सेवाकार्य हो रहे हैं, जिनकी आज समाज को अत्यंत आवश्यकता है। यह स्थल पर्यावरणीय दृष्टि से भी अमूल्य है, जहाँ सैकड़ों वृक्षोंवाला हरित क्षेत्र स्थानीय पर्यावरण का संतुलन बनाये रखता है। सरकार इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे और इस अनमोल धरोहर की रक्षा हेतु आवश्यक कदम उठाये। ज्ञापनों में विश्वास अभिव्यक्त किया गया है कि शासन-प्रशासन दूरदृष्टि से इस विषय का समाधान निकालेंगे और संत-समाज एवं लाखों-करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाओं का सम्मान करेंगे।

श्री अशोक भाई रावल, क्षेत्रमंत्री, विहिप, गुज.

श्री शैलेश भाई पटेल, गुजरात प्रांत कार्यवाह, रा.स्व.संघ

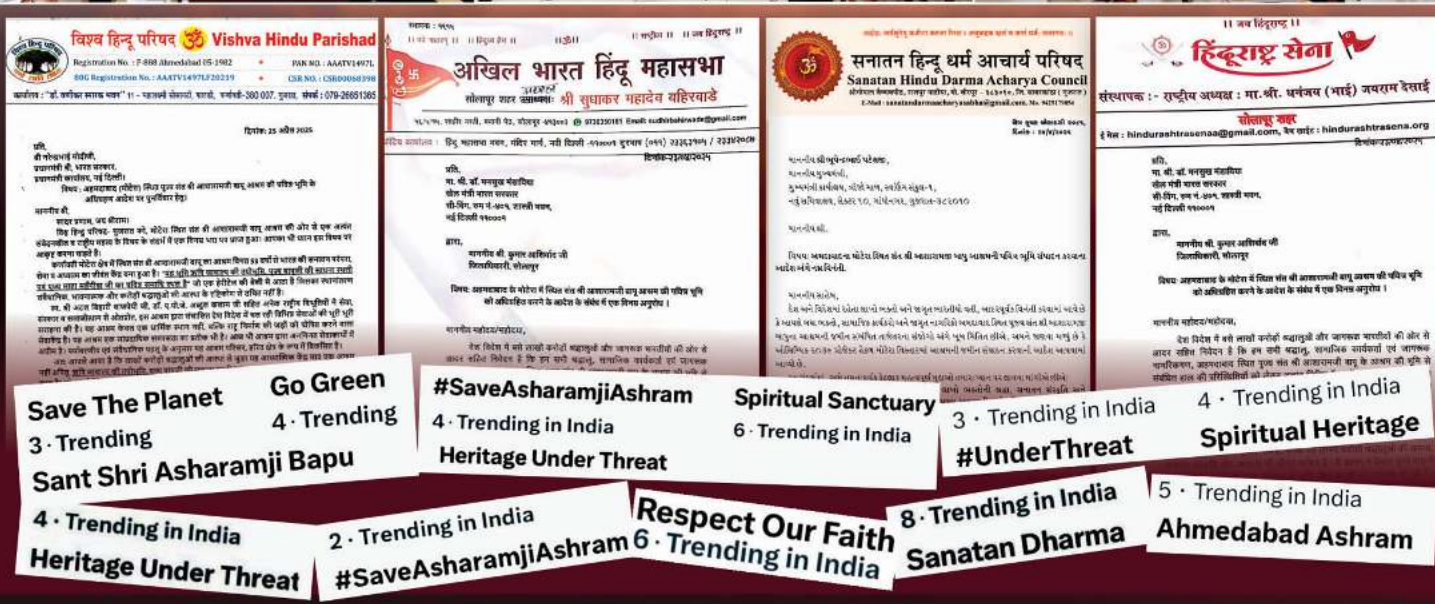

# भूमि का अपना प्रभाव होता है - पूज्य बापूजी

इस (अहमदाबाद आश्रम की) भूमि को साधारण मत समझना । तीर्थत्व है इसमें । यहाँ पूर्वकाल में जाबल्य ऋषि का आश्रम था । (ऊपरवाले) बड़ बादशाह के पास जहाँ कार्यालय है, वहाँ नींव खोदते गये तो यज्ञ की राख निकलती गयी । उसे हमने भी निकाला और हमारे सेवकों ने भी । कितनी ट्रकें राख निकली होगी, हम बता नहीं सकते ।

जब हम मोक्ष कुटीर में रहते थे तब एक बार हमारा वडोदरा की तरफ सत्संग था तो हम ताला लगा के चले गये । उस समय यहाँ आसपास की जमीन में गहरे चौड़े गड्ढे और खाइयाँ थीं (गुजराती में वांघां-कोतरां) और दारू की भट्ठियाँ थीं । उन लोगों का दारू बनाना और बेचना पेशा था । कुछ लोग आये और ताला तोड़ दिया । मैं आपको सत्य बताता हूँ, ताला टूटा लेकिन उनसे दरवाजा नहीं खुला । होल्डर में जो लोहे का डंडा होता है वह चिपका रहा । तब वे लोग मत्था टेक के गये कि 'क्या बाबा हैं ! क्या कुटिया है !' धरती का महत्त्व था ।

अवैध शराब बनानेवालों की यहाँ पहले ४० भट्ठियाँ चलती थीं । धीरे-धीरे वे सारी भट्ठियाँ बंद हो गयीं और इस तीर्थ का निर्माण हो गया जिसका फायदा आज सबको मिल रहा है । पिछले ५३ साल से यहाँ सतत ध्यान-भजन, सत्संग-सुमिरन होता है ।

अवैध शराब बनानेवालों की यहाँ पहले ४० भट्ठियाँ चलती थीं । धीरे-धीरे वे सारी भट्ठियाँ बंद हो गयीं और इस तीर्थ का निर्माण हो गया जिसका फायदा आज सबको मिल रहा है । यहाँ जो सत्संग जमता है वह कुछ निराला ही होता है । करोड़ों-करोड़ों दिल यहाँ आ के गये, उनमें कई उत्तम आत्मा भी होंगे, कई संत भी आकर गये ।

पिछले ५३ साल से यहाँ सतत ध्यान-भजन, सत्संग-सुमिरन होता है । मुख्य सड़क से थोड़ा-सा आश्रम की सड़क पर पैर रखते ही आनेवाले के विचारों में, भावों में, मन में परिवर्तन होना शुरू हो जाता है । और जब तक इस माहौल में वह रहेगा, तब तक उसके भाव, विचार ऊँचे रहेंगे, फिर बाहर गया तो धीरे-धीरे वह अपनी कपोल-कल्पित दुःखाकार, सुखाकार, चिंताकार वृत्तियों में खो जायेगा । इसलिए तीर्थ में जाने का माहात्म्य है क्योंकि जहाँ लोगों ने तप किया, साधन, ध्यान किया है, वहाँ जाने से अच्छी अनुभूति होती है । और आत्मशांति के तीर्थ में जिन्होंने प्रवेश किया है, उनके रोमकूपों एवं निगाहों से निकलनेवाली तरंगों से, वाणी से, उनकी हाजिरीमात्र से वे जहाँ रहते हैं वह जगह प्रभावशाली हो जाती है । ❐

## चौंकिये मत, यह है कड़वी सच्चाई !

# हर दिन होते हैं लगभग २ लाख गर्भपात : WHO

अंतर्राष्ट्रीय समाचार
*International News*

विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization) के अनुसार विश्व में औसतन प्रतिदिन २ लाख गर्भपात होते हैं।

'अमेरिकन एसोसिएशन फॉर कैंसर रिसर्च' द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार 'जो महिलाएँ गर्भपात कराती हैं उनको स्तन कैंसर का खतरा ४०% अधिक होता है।'

एक अन्य अध्ययन के अनुसार 'गर्भपात करानेवालीं महिलाओं को मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ीं समस्याएँ होने की सम्भावना ८१% अधिक होती है। गर्भपात का संबंध हिंसक व्यवहार, अवसाद (depression) जैसी मानसिक विकृतियों के साथ जोड़ा गया है। ऐसी महिलाओं को आत्महत्या के विचार आने की ६०% अधिक सम्भावना होती है।'

विज्ञान आज गर्भपात की थोड़ी-बहुत हानियाँ समझ रहा है और उन्हें समाज के सामने प्रकट कर रहा है लेकिन हमारे शास्त्र और महापुरुष तो इसके भयंकर दुष्परिणामों के प्रति वर्षों से आगाह करते रहे हैं।

पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है : ''गर्भपात, भ्रूणहत्या महापातक है। पाराशर स्मृति (४.२०) में आता है :

**यत्पापं ब्रह्महत्यायां द्विगुणं गर्भपातने।**

'ब्रह्महत्या से जो पाप लगता है उससे दुगना पाप गर्भपात करने से लगता है।'

जिस व्यक्ति को जो वस्तु मिलती है अगर उस वस्तु का वह आदर नहीं करता है तो दोबारा उसको वह वस्तु नहीं दी जाती यह प्रकृति का नियम है। जो गर्भपात कराते हैं वे लोग १०-१० जन्म तक बिलखते रहते हैं संतान के लिए।

मनुष्य अपना मूल्य घटा-घटाकर इतना तुच्छ हो गया कि जिस प्राणी को ८४ लाख योनियों में भटकते-भटकते अपना कल्याण करने का अवसर मिलता है, बहुत सौभाग्य है तो भारत में, वैदिक संस्कृति में जन्म लेने का अवसर मिलता है उसको जहरीली दवाओं-इंजेक्शनों द्वारा मरवा देता है ! जो गर्भ में निःसहाय अवस्था में पड़ा है, जिसने हमारा कुछ बुरा नहीं किया उस निरपराध मासूम बालक को कातिल औजारों के द्वारा टुकड़े-टुकड़े करवा के फेंकवा देता है ! जिसके पास चीखने की, पुकारने की भी क्षमता नहीं है ऐसे निःसहाय भ्रूण की हत्या कर देना कितना बड़ा प्राकृतिक, ईश्वरीय अपराध है !

**जिसने हमारा कुछ बुरा नहीं किया, जिसके पास चीखने-पुकारने की भी क्षमता नहीं है ऐसे निःसहाय भ्रूण की हत्या करना कितना बड़ा ईश्वरीय अपराध है !**

गर्भस्थ बालक ६ महीने का होता है तो उसको पूर्व के सैकड़ों जन्मों के कर्म याद आ जाते हैं और ७ महीने का होता है तो उसमें ज्ञानशक्ति भी प्रकट हो जाती है इसलिए उसको 'ऋषि' भी बोलते हैं। गर्भपात करानेवालों को एक निर्दोष ऋषि की हत्या करने का पाप लगता है।

भ्रूणहत्या इतना बड़ा अपराध है कि इस

# ऐसे योद्धा जिन्होंने मरते दम तक संस्कृति से निभाया !

- पूज्य बापूजी

## एकाग्रता और अनासक्ति का प्रताप

एकाग्रता और अनासक्ति सारी विद्याओं की कुंजी है । एकाग्रता से साहस आता है और अनासक्ति से व्यक्ति त्यागमय जीवन जीता है फिर चाहे वह साधु हो, गृहस्थी हो, राजा हो अथवा योद्धा हो । महाराणा प्रताप में ये २ गुण आंशिक रूप में थे तो कितने मजबूत व्यक्तित्व के धनी थे ! अकबर ने उनको कई प्रलोभन दिये लेकिन महाराणा प्रताप में अनासक्ति का गुण था तो प्रलोभनों से वे प्रलोभित नहीं हुए । अकबर ने उनको दबोचने, दबाने के लिए न जाने क्या-क्या प्रयोग किये पर उन बहादुर वीर ने अकबर के आगे घुटने नहीं टेके । कहावत है : कष्ट की चोट से दृढ़ व्यक्ति बलवान और साहसी होता है ।

**२९ मई : महाराणा प्रताप जयंती (ति.अ.) पर विशेष**

अकबर सारे नुस्खे आजमाकर थका लेकिन महाराणा प्रताप हार नहीं मानते, प्रलोभन के आगे झुकते नहीं, अकबर परेशान होता है । अकबर महाराणा प्रताप को झुकाना चाहता था परंतु वे आसक्त हों तो झुकें; न देह में आसक्ति है न धन में आसक्ति है... अनासक्ति है । और चंचल हों तो पकड़ में आ जायें, हार जायें परंतु वे एकाग्र हैं । युद्ध करते हैं तो एकाग्रता से करते हैं । एकाग्रता व अनासक्ति का कुछ अंश था तो योद्धाओं में शिरोमणि थे महाराणा प्रताप !

## प्राण क्यों नहीं निकल रहे थे ?

महाराणा प्रताप के बुढ़ापे के दिन आये । शरीर तो सबका ही नश्वर है, वे अंतिम घड़ियाँ गिन रहे थे । वैद्य ने कहा : ''अब महाराणा प्रताप शरीर छोड़ेंगे ।''

महाराणा प्रताप ने संकल्प कर लिया था लेकिन प्राण कंठ में फँसे थे, श्वास निकल नहीं रहा था । एक सामंत ने कहा : ''अन्नदाता ! आपने तो धर्म की रक्षा के लिए खूब कष्ट सहे, यहाँ तक कि जंगलों में घास की रोटी खाकर गुजारा किया । आप हिन्दू संस्कृति के गौरव की रक्षा में लगे रहे, ऐसे बहादुर योद्धा और प्राण नहीं निकल रहे ! क्या कारण है ?''

महाराणा प्रताप की आँखों से आँसू के दो मोती गिरे, बोले : ''मुझे व्याधि उतना कष्ट नहीं देती जितना आधि (मानसिक व्यथा) कष्ट दे रही है । मुझे मेरे पुत्र अमर सिंह की सुख-लोलुपता व लापरवाही पर चिंता होती है, उस चिंता के कारण मेरे प्राण कंठ में फँसे हैं ।

एक बार मेरा बेटा और मैं घोड़े पर सवार होकर गुजर रहे थे तो उसकी पगड़ी पेड़ की डाल में फँस के निकल गयी । उसको पता तक नहीं चला ।

एक अन्य प्रसंग में पहाड़ियों में सामंतों के साथ हम एक झोंपड़ी में बैठे थे । बाजू की दूसरी झोंपड़ी में अमर सिंह अपनी पत्नी के साथ बैठा था । उसकी पत्नी ने कहा : ''कुँवरजी ! कभी इन दुःखों का अंत भी होगा या नहीं ?''

अमर सिंह ने कहा : ''यह ठीक है परंतु हम दाजीराज (पिताजी) के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते ।''

# ...उतना ही वह निष्काम कर्म शक्तिशाली होता है - पूज्य बापूजी

संत कबीरजी के जीवन की घटना है । एक बार कबीरजी के द्वार पर कोई भिखारी आया । भिखारी ने कहा : ''महाराज ! मैं भूखा हूँ, मेरे पास खाने के लिए कुछ नहीं है ।''

कबीरजी ने रोटी खिला दी, फिर बोले : ''रोज-रोज कहाँ माँगता फिरेगा, कुछ मेहनत कर ।''

**११ जून : संत कबीरजी जयंती पर विशेष**

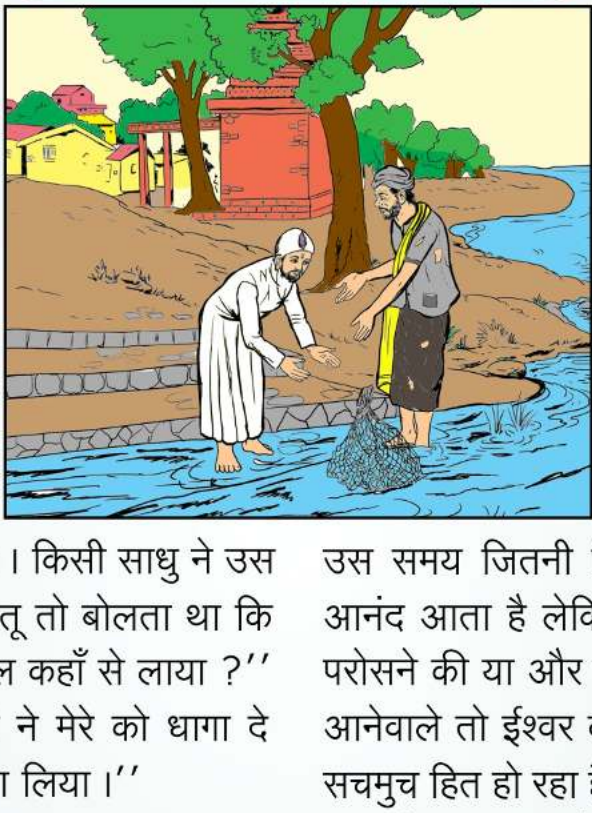

भिखारी बोला : ''महाराज ! पैसे नहीं हैं।''

कबीरजी : ''मेरे पास भी पैसे नहीं हैं, मैंने ताना बुना है, यह ले जा । इसे बेचकर अपनी आजीविका चला ।''

उस कमबख्त ने क्या किया कि वह धागा ले जाकर उससे जाल बनाया और मछलियाँ फँसाने लगा । किसी साधु ने उस भिखारी से कहा : ''अरे, तू तो बोलता था कि 'पैसे नहीं हैं' फिर यह जाल कहाँ से लाया ?''

भिखारी : ''कबीरजी ने मेरे को धागा दे दिया, उससे मैंने जाल बना लिया ।''

साधु ने कबीरजी के पास जाकर कहा : ''उसको आपने जाल बनाने के लिए धागा क्यों दे दिया ?''

कबीरजी : ''मेरे को पता नहीं था कि वह जाल बनायेगा और मछलियाँ फँसायेगा ।''

कबीरजी ने जाकर उसके पैर पकड़े : ''मुझे माफ कर दे, मेरा दान मेरे को वापस दे दे ।''

वह जाल ले आये और उसे जला दिया ।

अब गलती तो भिखारी की है लेकिन कबीरजी माफी माँग रहे हैं । क्यों ? कि उसका अहित न हो । उसकी भलाई के लिए अपनी रोजी-रोटी का जो साधन था वह दे दिया पर जब देखा कि वह उसका दुरुपयोग कर रहा है तो कबीरजी से रहा न गया । महापुरुषों का जीवन हमें संदेश देता है कि जीवन में दान-पुण्य, उदारता, करुणा तो चाहिए लेकिन दान का दुरुपयोग न हो इसकी सजगता भी आवश्यक है ।

बहुजनहिताय निष्काम कर्म करना चाहिए परंतु उससे जितना-जितना सामनेवाले का सचमुच लाभ होता है उतना ही वह निष्काम कर्म शक्तिशाली होता है ।

आप घर में झाड़ू लगाते हैं, बिछौना बिछाते हैं या भोजन परोसते हैं तो उस समय जितनी निष्कामता होती है उतना आनंद आता है लेकिन गुरुद्वार पर जब भोजन परोसने की या और कोई सेवा करते हैं तो वहाँ आनेवाले तो ईश्वर की तरफ जा रहे हैं, उनका सचमुच हित हो रहा है तो यह थोड़ी-सी भी सेवा आपको बहुत लाभ दे देती है । ❒

## वही सबसे बड़ा धनी है

**तुल्ये प्रियाप्रिये यस्य सुखदुःखे तथैव च ।**
**अतीतानागते चोभे स वै सर्वधनी नरः ॥**

'जो मनुष्य प्रिय-अप्रिय, सुख-दुःख और भूत-भविष्यत् - इन द्वन्द्वों में सम है वही सबसे बड़ा धनी है ।' **(महाभारत, वन पर्व : ३१३.१२१)**

## विद्यार्थी संस्कार

# कैसा अद्भुत है संतों के दिव्य ज्ञान का प्रभाव !

प्रायः लोग समझते हैं कि रहने के लिए सुख-सुविधाएँ हों, खाने के लिए तरह-तरह के व्यंजन हों, पहनने के लिए महँगे वस्त्र हों तभी हम सुखी होंगे परंतु क्या सांसारिक भोगों का सुख से कोई संबंध है ? क्या इनके बिना व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता है ? इन गूढ़ प्रश्नों का उत्तर जानते हैं संत विनोबाजी भावे द्वारा बताये गये अपने जीवन के एक संस्मरण से :

विनोबाजी बताते हैं कि ''मेरे जीवन के प्रारम्भ के ९ साल महाराष्ट्र के गागोदे गाँव में बीते । कई वर्षों के बाद १९३५ में मैं वहाँ गया । २-४ दिन वहाँ ठहरा । एक रात को चरखे के बारे में गांधी बापू को कुछ लिखना था तो मैंने आधी रात तक जागकर लिख लिया । फिर थोड़ा चिंतन करके सोनेवाला था, उतने में नजदीक के एक मंदिर से आ रही भजन की ध्वनि कानों में पड़ी । मैं उठा और चुपचाप वहाँ जाकर बैठ गया। एकाध घंटे तक भजन चलता रहा । उसे गानेवाले वहाँ एकत्रित गाँव के लोगों का उच्चारण इतना अशुद्ध था कि मेरे व्याकरण-प्रेम को वह असह्य ही लगता परंतु भक्तिभाव के आगे मुझे कुछ नहीं लगा । मैं बिल्कुल आनंद में मग्न हो गया । उन्होंने उस दिन जो भजन गाये उनमें से एक भजन मुझे विशेष मधुर लगा, जो आज भी याद है :

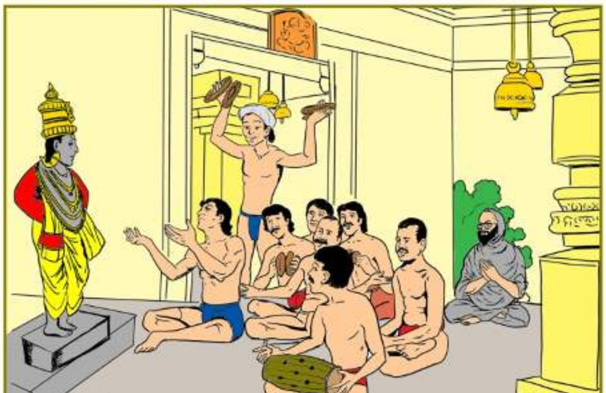

**सुख नाही कोठें आलिया संसारीं ।**
**वायां हांवभरी होऊं नका ॥**
**दुःख बांदवडी आहे हा संसार ।**
**सुखाचा विचार नाही कोठें ॥**

'इस संसार में कहीं भी सुख नहीं है इसलिए व्यर्थ लोभ मत करो । सारा संसार दुःख से भरा बंदीखाना है, इसमें सुख का विचार कहीं दिखता नहीं है ।'

८०-८५ घरों का वह छोटा-सा गाँव, अत्यंत दरिद्र, केवल एक लँगोटी पहने हुए लोग, शरीर पर दूसरा कपड़ा नहीं, शरीर की हड्डी-हड्डी दिख रही है और एक अभंग में लीन होकर भजन में तल्लीन हो गये हैं ! मैं वह दृश्य देखकर बिल्कुल प्रसन्न हो गया । मैं सोचने लगा, 'जिस गाँव में स्कूल नहीं, पढ़े-लिखे लोग नहीं उस गाँव में इतना ज्ञान लोगों को दिया किसने ?' ये लोग तुकारामजी आदि संतों के भजन भक्तिपूर्वक गाते हैं इसीलिए ऐसी बुद्धि आज भी इनके पास है । हमारी शक्ति है यह ।

तुकारामजी महाराज के घर में अत्यंत दारिद्र्य था । उनकी प्रथम पत्नी भूख से मरी तो तुकाराम महाराज कहते हैं : 'हे भगवान ! दुःख नहीं होता तो तेरा स्मरण नहीं होता ।'

यह जो भक्ति हमारे देश में है उसके कारण अत्यंत दारिद्र्य में भी लोगों के चेहरे पर हास्य दिखता है । गागोदे गाँव के उन दरिद्र लोगों की लकड़ी के समान शुष्क देह थी लेकिन भक्ति-रस की मस्ती उनमें भरी हुई थी ।''

# मेरुतुल्य पाप नाशक तथा भगवद्भक्ति व निरोगता प्रदायक व्रत

## निर्जला एकादशी पर विशेष

७ जून को निर्जला एकादशी (भागवत) है । इसकी महिमा व विधि के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

राजा युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा : ''जनार्दन ! ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी के व्रत की क्या महिमा है ?''

श्रीकृष्ण ने कहा : ''वेद की शब्दराशि का वर्गीकरण करनेवाले और १८ पुराणों के रचयिता भगवान वेदव्यासजी के होते हुए मैं तुमको क्या एकादशी का माहात्म्य सुनाऊँ ! व्यासजी को हम प्रार्थना करते हैं कि वे संतपुरुष हमको सत्संग सुनायें ।''

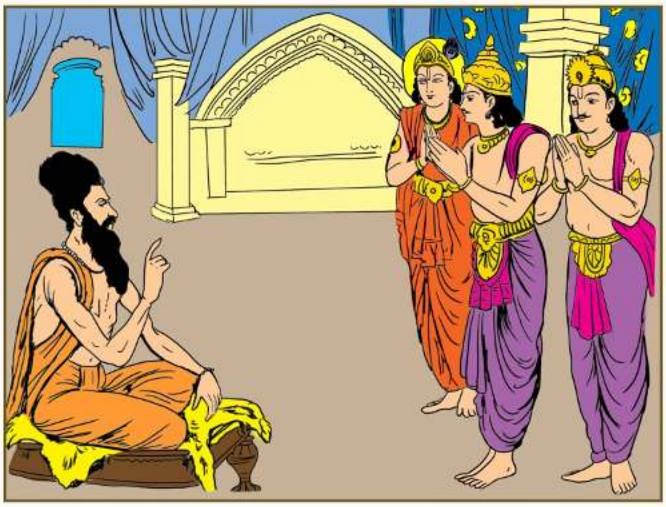

भगवान भी संतपुरुष का सत्संग सुनने का महत्त्व जानते हैं ।

व्यासजी कहते हैं : ''मनुष्य को दोनों पक्षों की एकादशियों का व्रत करना ही चाहिए । गृहस्थी और व्रत न कर सके तो उसको शुक्ल पक्ष की १२ एकादशियाँ और चतुर्मास के कृष्ण पक्ष की ४ एकादशियाँ तो अवश्य-अवश्य करनी चाहिए । जो व्रत नहीं करता, पशु की नाईं सभी दिन खाता है वह पाशवी योनियों में जाता है और नरकों के दुःख भोगता है । सर्व दोषों को हरनेवाली, भगवद्भक्ति भरनेवाली और अन्न-जल की आदत से बँधे जीवों को अपनी आत्ममस्ती व आत्मबल में लानेवाली एकादशी का व्रत तो सभीको करना चाहिए । राजन् ! जननाशौच (संतान-जन्म के समय लगनेवाला सूतक) और मरणाशौच (घर-परिवार में किसीकी मृत्यु के समय लगनेवाला सूतक) में भी एकादशी को भोजन नहीं करना चाहिए ।''

इतने में भीम बोल पड़े : ''व्यास भगवान ! युधिष्ठिर महाराज तो एकादशी करते हैं, मेरी कुंती माता तथा द्रौपदी, भैया अर्जुन, नकुल, सहदेव भी करते हैं लेकिन मैं एक बार पेटभर भोजन कर लूँ फिर भी कोई मुझसे कहे कि 'अब एकादशी करो' तो मैं नहीं कर सकता । मेरे पेट में वृक नाम की अग्नि ऐसी है कि न खाऊँ तो कुछ-का-कुछ हो जाता है । इसलिए महामुने ! मैं वर्षभर में केवल एक ही उपवास कर सकता हूँ । तो मेरे जैसों का उद्धार कैसे होगा ?''

व्यासजी : ''पुत्र ! ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में निर्जला एकादशी होती है । उसका यत्नपूर्वक निर्जल व्रत रखने से मनुष्य निर्दोष नारायण की भक्ति और कृपा पाने तथा निरोग रहने में सक्षम हो जाता है । नारकीय यातनाओं से अगर तुम बचना चाहते हो और पशु-योनियों से अपनी रक्षा करना चाहते हो तो यत्नपूर्वक निर्जला एकादशी के दिन उपवास करो ।

## निर्जला एकादशी का विधि-विधान

इस दिन कुल्ला या आचमन के सिवाय किसी प्रकार का जल मुख में न डाले अन्यथा व्रत भंग हो जाता है । एकादशी को सूर्योदय से लेकर दूसरे दिन के सूर्योदय तक मनुष्य जल का त्याग

# नोटबुक रजिस्टर

## कम मूल्य, उच्च गुणवत्ता व आकर्षक डिजाइन के साथ सुसंस्कारों का सिंचन

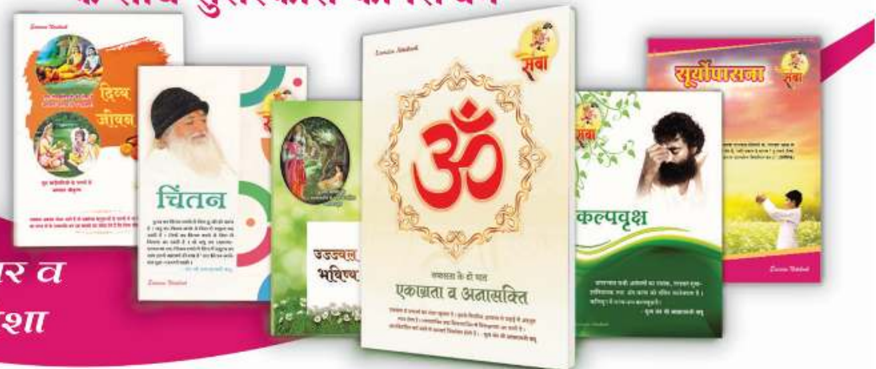


सुसंस्कार व सही दिशा

क्या है इनमें खास ?

✻ संयम, सदाचार, श्रद्धा, भक्ति, उद्यम, कर्तव्यपालन आदि सद्गुणों से जीवन को ओतप्रोत करनेवाले पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत ✻ हर पृष्ठ पर प्रेरणादायी सुवाक्य, जो विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, माता-पिता व गुरुजनों के प्रति आदरभाव आदि सुसंस्कारों से भर दें ✻ मनोबल, बुद्धिबल व स्वास्थ्यबल बढ़ाने के सचोट उपाय ✻ एकाग्रता व स्मरणशक्ति बढ़ाने की कुंजियाँ ✻ परीक्षा में सफल होने के उपाय ✻ प्रसन्नता, उत्साह, आनंद व जीवनीशक्ति वर्धक प्राकृतिक दृश्य, तस्वीरें तथा सांस्कृतिक प्रतीक

| | | |
|---|---|---|
| लाँग नोटबुक ९६ पेज | लाँग नोटबुक २४८ पेज | A4 लाँग रजिस्टर २९२ पेज |
| लाँग नोटबुक १२८ पेज | A4 लाँग रजिस्टर ९६ पेज | A4 लाँग रजिस्टर ३८८ पेज |
| लाँग नोटबुक १७६ पेज* | A4 लाँग रजिस्टर १६० पेज | |

✻ 'लाँग नोटबुक १७६ पेज' 2 Line, 4 Line, Square, 3 in 1 व practical में भी उपलब्ध है ।

सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग) Visit: https://asharamjibapu.org/notebooks

## गर्मी से राहत दिलानेवाले

# शीतलता-प्रदायक, स्वादिष्ट गुणकारी पेय

**लीची पेय :** लीची करती है कमजोरी को दूर, शरीर को बनाती है पुष्ट तथा पाचनक्रिया को करती है मजबूत । **सेब पेय :** सेब है उत्तम स्वास्थ्यवर्धक, पोषण और स्वाद से भरपूर । **अनन्नास पेय :** अनन्नास है रोगप्रतिरोधक क्षमता, पाचनशक्ति तथा नेत्रज्योति वर्धक । **मैंगो ओज :** आम है सप्तधातुवर्धक व उत्तम हृदयपोषक

२७० मि.ली. एवं ५०० मि.ली. में भी उपलब्ध

# स्वास्थ्यवर्धक शरबत

हर घूँट में मधुरता व शक्ति का एहसास

**गुलाब शरबत :** सुमधुर, जायकेदार, शारीरिक व मानसिक थकावट को मिटानेवाला । **पलाश शरबत :** जलन, प्यास आदि में लाभदायक, गर्मी सहने की शक्ति बढ़ानेवाला । **ब्राह्मी शरबत :** स्मरणशक्तिवर्धक, दिमाग को शांत व ठंडा रखने में सहायक

wt. = Net weight

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

मानव जब भी भूल हैं जाता, दया, धर्म औ' परोपकार।
याद दिलाने हरि हैं आते, संतरूप में लेकर अवतार ।।

# पूज्य बापूजी के अवतरण दिवस पर देशभर में हुए विभिन्न सेवाकार्य


RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st May 2025

## अवतरण दिवस पर आश्रमों में उमड़ा जनसैलाब

## 'हर घर अलख जगाओ' ऋषि प्रसाद सदस्यता अभियान का संकल्प व सेवा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन लोक कल्याण सेतु


**स्वामी** : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी